Toppersnotes®
Unleash the topper in you

RAS

राजस्थान प्रशासनिक सेवा

मुख्य परीक्षा

राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)

भाग – 2

लेखांकन, अंकेक्षण एवं प्रशासकीय नीतिशास्त्र

SIERRA INNOVATIONS

RAS – मुख्य परीक्षा

भाग - 2

लेखांकन एवं अंकेक्षण

S.No.	Chapter Name	Page No.
1.	**वित्तीय विवरण** • वित्तीय विवरण–विश्लेषण का तात्पर्य • वित्तीय विवरणों के विश्लेषण का महत्त्व • वित्तीय विवरणों के विश्लेषण के उद्देश्य • वित्तीय विवरणों के विश्लेषण की तकनीकें o तुलनात्मक विवरण o समरूप और सामान्य आकार विवरण o प्रवृत्ति विश्लेषण o अनुपात विश्लेषण o रोकड़ प्रवाह विश्लेषण • कार्यशील पूँजी o कार्यशील पूँजी की अवधारणा एवं प्रबन्ध o कार्यशील पूँजी प्रबन्ध • कार्यशील पूँजी की आवश्यकता एवं महत्व • पर्याप्त कार्यशील पूँजी के लाभ • कार्यशील पूँजी के प्रकार अथवा वर्गीकरण • कार्यशील पूँजी को निर्धारित करने वाले तत्व • उत्तरदायित्व लेखांकन o इंस्टीट्यूट ऑफ कॉस्ट एन्ड वर्क्स एकाउंटेंट्स ऑफ इण्डिया o उत्तरदायित्व लेखांकन के महत्वपूर्ण लक्षण या मूलभूत पहलू o उत्तरदायित्व लेखा के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए कदम o उत्तरदायित्व लेखांकन के लाभ o उत्तरदायित्व केन्द्र के प्रकार • सामाजिक लेखांकन o सामाजिक लेखांकन की विशेषताएँ o सामाजिक लेखांकन की आवश्यकता/लाभ • विशेषताएँ • प्रकार • आंतरिक लेखा परीक्षा • बाहरी लेखा परीक्षा • वित्तीय लेखापरीक्षा	1
2.	**अंकेक्षण** • अंकेक्षण के उद्देश्य o प्राथमिक उद्देश्य o द्वितीयक उद्देश्य	22

	o विशेष उद्देश्य • अंकेक्षण के लाभ • अंकेक्षण की सीमाएँ • आन्तरिक नियन्त्रण o एक अच्छी आन्तरिक नियंत्रण प्रणाली की विशेषताएँ o आन्तरिक नियन्त्रण प्रणाली के भाग o आंतरिक नियंत्रण के घटक o आंतरिक नियंत्रण की सीमाएँ o उद्देश्य o प्रकार • सामाजिक अंकेक्षण o महत्त्व o लाभ o सीमाएँ o भारत में सामाजिक लेखा परीक्षा • निष्पादन लेखा परीक्षा o निष्पादन लेखा परीक्षा का उद्देश्य • दक्षता लेखा परीक्षा/ कार्यकुशलता • दक्षता लेखा परीक्षा अपने दायरे में बहुत व्यापक है। o दक्षता के मापन के लिए पूर्व–आवश्यकताएँ o दक्षता लेखा परीक्षा का उद्देश्य o लाभ	
3.	**बजट** • भारतीय बजट का इतिहास • बजट की विशेषताएँ • बजट के प्रकार • बजट निर्माण के विभिन्न सिद्धांत o वार्षिकी का सिद्धांत o विलय अथवा समाप्त हो जाने का नियम o राजकोषीय अनुशासन o समावेशिता o सटीकता o पारदर्शिता और उत्तरदायित्व o बजट के अन्य सिद्धांत • **बजटरी नियंत्रण** o उद्देश्य o नियंत्रण की प्रकिया o सफल बजटरी नियंत्रण प्रणाली की आवश्यक शर्ते o लाभ o सीमाएँ	**37**

प्रशासकीय नीतिशास्त्र

S.No.	Chapter Name	Page No.
4.	**नीतिशास्त्र एवं मानवीय मूल्य** • नीतिशास्त्र • नीतिशास्त्र के निर्धारक तत्व/ कारक • नैतिक मूल्यों के प्रभाव व परिणाम • नीतिशास्त्र के आयाम • महापुरूषों, समाज सुधारकों तथा प्रशासकों के जीवन से प्राप्त शिक्षा • मानव मूल्य • नैतिक मूल्य आत्मनिष्ठ हैं या वस्तुनिष्ठ	**46**
5.	**नैतिक समप्रत्यय** • ऋत की अवधारणा • ऋण की अवधारणा • संकल्प की स्वतंत्रता एवं नैतिक उत्तरदायित्व • दंड • सुख • आनन्द • अच्छाई/शुभ • उपयोगितावाद • आत्मपर्णवाद • कर्तव्य • बाध्यता • ऐच्छिक कर्म • अनैच्छिक या निरैच्छिक कार्य • सद्गुण	**73**
6.	**निजी एवं सार्वजनिक संबंधों में नीतिशास्त्र की भूमिका** • निजी संबंधों में नीतिशास्त्र • प्रशासकों का आचरण • सत्यनिष्ठता • नेतृत्व • अभिवृत्ति • सिविल सेवाओं हेतु बुनियादी मूल्य • सहिष्णुता (Tolerance) • परानुभूति/समानुभूति • कमजोर वर्गों के प्रति करूणा • प्रशासनिक सुधार आयोग (ARC) की सिफारिशें • प्रशासन में नैतिकता	**83**
7.	**भगवद् गीता का नीतिशास्त्र एवं प्रशासन में इसकी भूमिका** • गीता का नैतिक दर्शन • निष्काम कर्मयोग • स्थितप्रज्ञ	**93**
8.	**महात्मा गांधी का नीतिशास्त्र** • गांधी जी के दार्शनिक विचार और उनका योगदान • गांधी जी के राजनीतिक विचार और उनका योगदान • गाँधी जी के सामाजिक संस्कृति विचार और योगदान • गाँधी जी के आर्थिक विचार एवं उनका योगदान • गाँधी जी के नैतिक विचार एंव योगदान	**96**
9.	**भारत एवं विश्व के नैतिक चिंतकों एवं दार्शनिकों का योगदान** • सुकरात	**104**

	• जीन रूसो • प्लेटो • जॉन स्टुअर्ट मिल • कान्ट • भारतीय दार्शनिक परम्परा	
10.	**तनाव प्रबंधन** • तनाव • तनाव के प्रभाव • तनाव के कारण • उच्च तनाव के लक्षण • तनाव प्रबंधन	**123**
11.	**संवेगात्मक बुद्धि** • संवेगात्मक बुद्धि की संकल्पना • गोलमैन का विचार • दलीप सिंह (2003) • मुख्य परिभाषाएं • संवेगात्मक बुद्धि के प्रतिमान • संवेगात्मक बुद्धि के उपयोग • उच्च संवेगात्मक समझ रखने वालों की विशेषताएं • संवेगात्मक बुद्धि का प्रशासन में उपयोग	**128**
12.	**केस स्टडी** • केस स्टडी के उद्देश्य • केस स्टडी की विशेषताएं • केस स्टडी की उपयोगिता • केस स्टडी के उदहारण	**135**

प्रिय विद्यार्थी, टॉपर्सनोट्स चुनने के लिए धन्यवाद।

नोट्स में दिए गए QR कोड्स को स्कैन करने लिए टॉपर्स नोट्स ऐप डाउनलोड करे ।

ऐप डाउनलोड करने के लिए दिशा निर्देश देखे :-

ऐप इनस्टॉल करने के लिए आप अपने मोबाइल फ़ोन के कैमरा से या गूगल लेंस से QR स्कैन करें ।

टॉपर्सनोट्स एग्जाम प्रिपरेशन ऐप

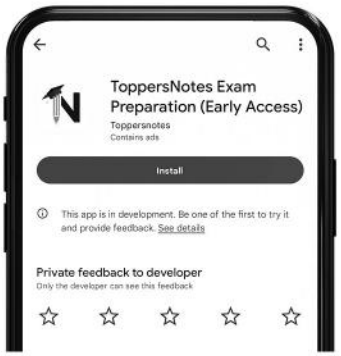

टॉपर्सनोट्स ऐप डाउनलोड करें गूगल प्ले स्टोर से ।

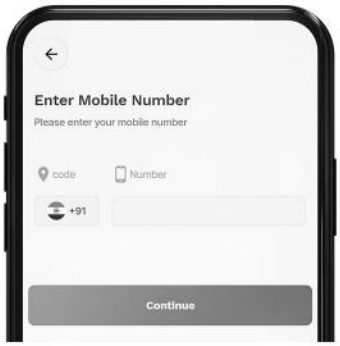

लॉग इन करने के लिए अपना **मोबाइल नंबर** दर्ज करें ।

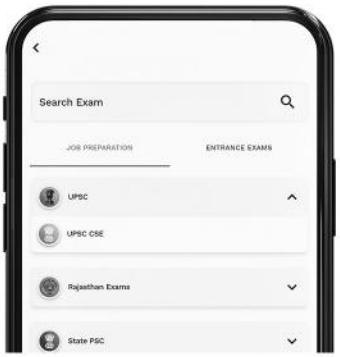

अपनी **परीक्षा श्रेणी** चुनें ।

सर्च बटन पर क्लिक करें ।

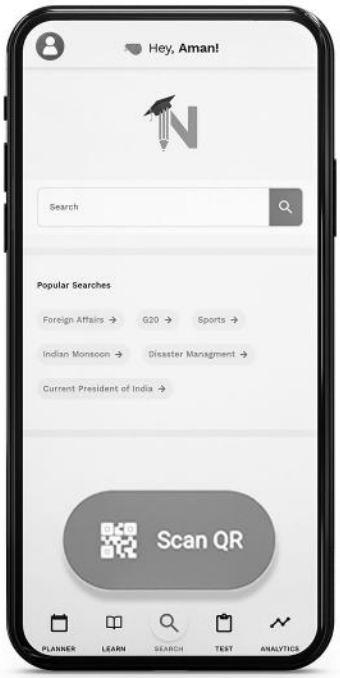

SCAN QR पर क्लिक करें ।

किताब के **QR कोड को स्कैन** करें ।

किसी भी तकनीकी सहायता के लिए
hello@toppersnotes.com पर मेल करें
या **766 56 41 122** पर whatsapp करें ।

I CHAPTER वित्तीय विवरण

- वित्तीय विवरण किसी संगठन के वित्तीय परिणामों, वित्तीय स्थिति और नकद प्रवाह के बारे में रिपोर्ट का संग्रह हैं।
- वे निम्नलिखित कारणों से उपयोगी हैं –
  - नकद उत्पन्न करने के लिए व्यवसाय की क्षमता निर्धारित करने के लिए, और उस नकद के स्रोतों और उपयोगों को निर्धारित करने के लिए।
  - यह निर्धारित करने के लिए कि क्या किसी व्यवसाय के पास अपने कर्ज का भुगतान करने की क्षमता है या नहीं।
  - किसी भी लम्बे लाभप्रदता के मुद्दों को जानने के लिए एक प्रवृत्ति रेखा पर वित्तीय परिणामों को ट्रैक करने के लिए।
  - उन विवरण से वित्तीय अनुपात प्राप्त करने के लिए जो व्यापार की स्थिति को इंगित कर सकते हैं।
  - व्यावसायिक प्रकटीकरण में उल्लिखित कुछ व्यापार लेन–देन के विवरण की जाँच करने के लिए।
  - वित्तीय विवरणों के एक सेट की मानक सामग्री इस प्रकार हैं –
    - **बैलेंस शीट –** रिपोर्ट की तिथि के अनुसार इकाई की सम्पत्ति, देनदारियों और शेयर धारकों की इक्विटी दिखाती है। यह ऐसी जानकारी नहीं दिखाता है जो समय की अवधि को कवर करता है।
    - **आय विवरण** – रिपोर्टिंग अवधि के लिए इकाई के संचालन और वित्तीय गतिविधियों के परिणाम दिखाता है। इसमें राजस्व, व्यय, लाभ और हानियाँ शामिल हैं।
    - **नकदी प्रवाह का बयान** – रिपोर्टिंग अवधि के दौरान इकाई के नकद प्रवाह में परिवर्तन दिखाता है।
    - **पूरक नोट्स** – जीएएपी या आईएफआरएस जैसे लागू लेखांकन ढाँचे के अनुसार अनिवार्य रूप से विभिन्न गतिविधियों की व्याख्या, कुछ खातों पर अतिरिक्त विवरण और अन्य वस्तुओं को शामिल किया गया है।

वित्तीय विवरण–विश्लेषण का तात्पर्य

- वित्तीय विवरणों में सन्निहित वित्तीय सूचनाओं को समझने के क्रम में तथा फर्म के संचालन संबंधी निर्णयों को लेने के लिए विवेचनात्मक परीक्षण की प्रक्रिया को वित्तीय विवरण विश्लेषण कहते हैं।
- यह मूलभूत रूप से वित्तीय विवरण में दिए गए विभिन्न संख्याओं और तथ्यों के बीच संबंधों का अध्ययन तथा व्याख्या है जिससे किसी भी फर्म की लाभप्रदता और प्रचालन कार्यक्षमता दृष्टिगत होती है जो वित्तीय स्थिति एवं भविष्य परिदृश्य के मूल्यांकन में सहायक होती हैं।
- 'वित्तीय विश्लेषण' में विश्लेषण और व्याख्या दोनों का समावेश है।
- विश्लेषण से आशय वित्तीय विवरणों में दिए गए वित्तीय आँकड़ों का विधिवत् वर्गीकरण द्वारा सरलीकरण करना है।
- व्याख्या से आशय आँकड़ों के अर्थ एवं अभिप्राय स्पष्ट करने से है।
  - ये दोनों एक–दूसरे के पूरक हैं।
- ''विश्लेषण बिना व्याख्या अर्थहीन है और व्याख्या बिना विश्लेषण कठिन ही नहीं असंभव है।''

- वित्तीय विवरणों का विश्लेषण एक निर्णावक प्रक्रिया है जिसका उद्देश्य एक उपक्रम की भूतपूर्व और वर्तमान वित्तीय स्थिति और प्रचालन के परिणाम का आकलन करना है, जिसका प्राथमिक उद्देश्य भविष्यकालीन परिस्थितियों के लिए सर्वोच्य अनुमान ज्ञात करना है।
- इसमें मुख्यतः वित्तीय विवरणों में दर्शायी गई सूचनाओं का पुनः–समूहीकरण और व्याख्या का समावेश होता है जो व्यावसायिक इकाइयों की क्षमता और कमजोरियों पर प्रकाश डालता है, जो कि अन्य फर्मों से तुलना (अनुप्रस्थ व्याख्या) और फर्म की विभिन्न समयावधियों पर स्वयं का निष्पादन (समय श्रृंखला विश्लेषण) संबंधी निर्णय लेने में सहायक हो सकते हैं।

वित्तीय विवरणों के विश्लेषण का महत्त्व

- वित्तीय विश्लेषण एक फर्म की वित्तीय सुदृढ़ता एवं कमजोरियों को पहचानने का एक प्रक्रम है, जिसमें तुलना–पत्र तथा लाभ व हानि विवरण की मदों के बीच उचित संबंधों को देखा जाता है।
- वित्तीय विश्लेषण की जिम्मेदारी फर्म के प्रबंधन द्वारा या फर्म से बाहर के पक्षों द्वारा ली जा सकती है।
  - जैसे कि फर्म का स्वामी, व्यापारिक लेनदार, ऋणदाता, निवेशक, श्रम संगठन, विश्लेषक तथा अन्य।
- विश्लेषण की प्रकृति, उपयोगकर्ता अर्थात्, विश्लेषक के उद्देश्य पर आधारित होती है जो भिन्न–भिन्न हो सकती है।
- एक विश्लेषक द्वारा प्रायः प्रयुक्त की जाने वाली तकनीक आवश्यक नहीं है कि दूसरे विश्लेषक के उद्देश्य को पूरा करें, क्योंकि विश्लेषण की रुचि में भिन्नता होती है।
- वित्तीय विश्लेषण विभिन्न उपयोगकर्ताओं के लिए निम्न प्रकार से उपयोगी एवं महत्त्वपूर्ण होता है –
  - **वित्त प्रबंधक**
    - इसमें वित्तीय विश्लेषण का केन्द्र बिंदु कंपनी के प्रबंधकीय निष्पादन, निगम सक्षमता, वित्तीय सुदृढ़ता तथा कमजोरियों और कम्पनी की उधार पात्रता से संबंधित तथ्यों एवं संबंधों पर होता है।
    - एक वित्त प्रबंधक को निश्चित रूप से विश्लेषण के विभिन्न साधनों से सुसज्जित होना चाहिए ताकि फर्म के लिए विवेकपूर्ण निर्णय लिए जा सकें।
    - विश्लेषण के साधन लेखांकन आँकड़ों के अध्ययन में सहायता करते हैं ताकि संचालन नीतियों की सत्ता, व्यवसाय का निवेश मूल्य, साख मान तथा संचालन की सक्षमता की जाँच का निर्धारण हो सके।
    - ये तकनीकें वित्तीय नियंत्रण के क्षेत्रों तथा फर्म के लिए वास्तविक वित्तीय संचालन की निरंतर समीक्षा में सक्षम बनाने हेतु समान रूप से महत्त्वपूर्ण होती हैं।
    - इसके साथ ही प्रमुख विचलनों के कारणों को विश्लेषित करने में सहायक होती हैं जिसके परिणामस्वरूप जब कभी संकेत मिलते हैं तो सुधारात्मक कार्यवाही की जाती है।
  - **उच्च प्रबंधन**
    - वित्तीय विश्लेषणों का महत्त्व केवल वित्त प्रबंधकों तक ही सीमित नहीं है।
    - इसका परिक्षेत्र व्यापक है जिसके अंतर्गत सामान्यतः उच्च प्रबंधन तथा अन्य कार्यात्मक प्रबंधक शामिल होते हैं।
    - फर्म का प्रबंधन वित्तीय विश्लेषण के प्रत्येक पहलू में रुचि दिखा सकता है।
    - यह कुल मिलाकर उनकी ही जिम्मेदारी होती है कि वे देखें कि फर्म के संसाधनों को अधिकतम सक्षमता के साथ इस्तेमाल किया जाए ताकि फर्म की वित्तीय स्थिति सुदृढ़ रहे।
    - वित्तीय विश्लेषण प्रबंधन की सफलता को मापने में सहायता करते हैं।

- दूसरे शब्दों में, कंपनी के संचालन, वैयक्तिक निष्पादन मूल्यांकन तथा आंतरिक नियंत्रण की व्यवस्था के आकलन में सहायता करते है।

○ **व्यापारिक देय**

- व्यापारिक देय, वित्तीय विवरणों के विश्लेषण द्वारा न केवल कंपनी की अल्पकालीन दायित्व भुगतान क्षमता का मूल्यांकन करते हैं, बल्कि एक समय विशेष पर उसकी वित्तीय देयताओं को पूरा करने की क्षमता के साथ–साथ भविष्य में सत्त रूप से वित्तीय देयताओं को पूरा करने की संभावना को भी देखते हैं।
- व्यापारिक देय एक फर्म की क्षमता में विशेष रूप से रुचि रखते हैं जो एक बहुत छोटी–सी अवधि में उनके दावे को पूरा करने की क्षमता रखती है।
  - इस प्रकार से, उनका विश्लेषण फर्म की द्रवता स्थिति के मूल्यांकन को सुनिश्चित करता है।

○ **ऋणदाता**

- दीर्घकालिक ऋण या उधार के पूर्तिकार, फर्म के दीर्घकालिक ऋण शोधन क्षमता एवं उत्तरजीविता से चिंतित होते हैं।
- यह एक विशेष समयावधि के दौरान फर्म की लाभप्रदता, ब्याज तथा मूलधन को चुकाने के लिए रोकड़ पैदा करने की क्षमता तथा विभिन्न निधियों के स्रोतों (पूँजी संरचना संबंधों) के मध्य संबंधों का विश्लेषण करते हैं।
- दीर्घकालिक ऋणदाता ऐतिहासिक वित्तीय विवरणों का विश्लेषण करते हैं, ताकि वे अपने भविष्य की ऋण शोधन क्षमता एवं लाभप्रदता की जाँच कर सकें।

○ **निवेशक**

- निवेशक, जो कि फर्म के अंशों में अपना धन निवेश करते हैं, फर्म के अर्जन के संदर्भ में रुचि रखते हैं।
- इस तरह से, वे फर्म की वर्तमान एवं भावी लाभप्रदता के बारे में विश्लेषण करते हैं।
- इसके साथ ही फर्म के पूँजी ढाँचे में रुचि रखते हैं ताकि वे फर्म के अर्जन एवं जोखिमों पर इसके प्रभाव के बारे में जान सकें।
- अंश धारक या निवेशक प्रबंधन की सक्षमता का मूल्यांकन भी करते हैं और यह निर्धारित करते हैं कि बदलाव की जरूरत है या नहीं।
  - हालाँकि कुछ बड़ी कंपनियों में, अंश धारकों की रुचि, इस बारे में सीमित होती है कि वे अंश खरीदे, बेचे या उन्हें धारित रखें अथवा नहीं।

○ **श्रम संगठन**

- श्रम संगठन वित्तीय विवरणों का विश्लेषण यह जानने के लिए करते हैं कि क्या कंपनी वर्तमान में मजदूरी में बढ़ोत्तरी वहन कर सकती है या नहीं या फिर उत्पादकता बढ़ाकर तथा कीमत ऊँची करके बढ़ी हुई मजदूरी को समाहित कर सकती है या नहीं।

○ **अन्य**

- अर्थशास्त्री, अनुसंधानकर्ता आदि वित्तीय विवरणों का विश्लेषण वर्तमान व्यवसाय तथा आर्थिक स्थितियों के बारे में अध्ययन करने के लिए करते हैं।
- सरकारी संस्थाओं को मूल्य नियमन, दर निर्धारण तथा अन्य ऐसे ही उद्देश्यों के लिए विश्लेषण की आवश्यकता होती है।

वित्तीय विवरणों के विश्लेषण के उद्देश्य

- वित्तीय विवरणों के विश्लेषण प्रबंधकीय निष्पादनों एवं फर्म की सक्षमता से संबद्ध महत्त्वपूर्ण तथ्यों को प्रकट करते हैं।
- व्यापक तौर पर विश्लेषण के उद्देश्यों को वित्तीय विवरणों में समाहित फर्म की सुदृढ़ता एवं कमजोरियों की दृष्टि से सूचनाओं को जानने में तथा फर्म के भविष्य की संभावनाओं के पूर्वानुमान को समझने में निहित माना जाता है और इसी कारण विश्लेषकों को फर्म के संचालन से संबंधित तथा अतिरिक्त निवेश के निर्णयों को लेने के योग्य बनाया जाता है।
  - विशेष रूप से वित्तीय विश्लेषणों को निम्नलिखित उद्देश्यों की पूर्ति के लिए अपनाया जाता है।
- कुल मिलाकर फर्म की वर्तमान लाभप्रदता एवं संचालन सक्षमता के साथ इसके विभिन्न विभागों को मूल्यांकित किया जाता है।
  - इस तरह से फर्म की वित्तीय स्थिति को निर्णित किया जाता है।
- फर्म की वित्तीय स्थितियों के विभिन्न संघटकों के सापेक्षिक महत्त्व को पता करने के लिए।
- फर्म की लाभप्रदता/वित्तीय स्थिति में बदलाव के कारणों को जानने के लिए।
- फर्म द्वारा अपने ऋणों की पुनर्भुगतान क्षमता को मापने के लिए तथा फर्म की अल्पकालिक तथा दीर्घकालिक द्रवता की स्थिति के मूल्यांकन के लिए।
- विभिन्न फर्मों के वित्तीय विवरणों के विश्लेषण द्वारा एक अर्थशास्त्री चालू वित्तीय नीतियों में केन्द्रित आर्थिक सामर्थ्य और कमियों की सीमा को माप सकता है।
- वित्तीय विवरणों के विश्लेषण बहुत सारी सरकारी कार्यवाहियों की संबद्धताओं जैसे लाइसेंसिंग, नियंत्रण, मूल्य निर्धारण, व्यापारिक लाभ की सीमा लाभांश स्थिरण, निगम क्षेत्र को कर छूट तथा अन्य रियायतें आदि के लिए आधारशिला होते हैं।

वित्तीय विवरणों के विश्लेषण की तकनीकें

तुलनात्मक विवरण

- ये वे विवरण हैं जो दो अथवा अधिक समयावधियों में एक फर्म की लाभप्रदता एवं वित्तीय स्थिति को तुलनात्मक रूप में दर्शाते हैं जिससे कि दो या अधिक समयावधियों में फर्म की स्थिति का पता चलता है।
- यह सामान्यतः तुलनात्मक रूप से तुलना–पत्र और लाभ व हानि विवरण नामक दो महत्त्वपूर्ण वित्तीय विवरणों पर लागू होता है।
- वित्तीय आँकड़ें केवल तभी तुलनात्मक होते हैं जब समान लेखांकन सिद्धांत का प्रयोग इनके निर्माण में किया जाता है।
- यदि ऐसा नहीं है तो लेखांकन सिद्धांतों से व्यतिक्रम को पादटिप्पणी के रूप में दर्शाया जाना चाहिए।
- तुलनात्मक आँकड़े वित्तीय स्थिति और प्रचालन परिणामों की प्रवृत्ति और दिशा को इंगित करते हैं।
  - इस विश्लेषण को **'क्षैतिज विश्लेषण'** के नाम से भी जाना जाता है।
- यह विवरण लाभ व हानि विवरण और तुलना–पत्र के निर्माण में वर्तमान और गत वर्ष सहित वर्ष के दौरान हुए परिवर्तन के आँकड़ों को अलग स्तंभ में परिशुद्ध/निरपेक्ष और सापेक्ष आधार पर प्रस्तुत करता है।
- परिणामस्वरूप इस विवरण के माध्यम से भिन्न तिथियों पर खाता शेष और विभिन्न समयावधि पर भिन्न–भिन्न प्रचालन गतिविधियों का सारांश ही केवल संभव नहीं है बल्कि इन तिथियों के मध्य वृद्धि अथवा कमी की सीमा का मापन भी संभव है।

- तुलनात्मक विवरणों में दिए गए आँकड़ों का प्रयोग परिवर्तन की दिशा की पहचान करता है और एक संस्था के निष्पादन सूचकों की प्रवृत्ति को भी इंगित करता है।

समरूप और सामान्य आकार विवरण

- यह विवरण कुछ सामान्य मदों के साथ एक वित्तीय विवरण के विभिन्न मदों के बीच संबंध का संकेत देते हैं जिसमें सामान्य मद के प्रत्येक मद को प्रतिशत के रूप में व्यक्त करता है।
  - इस प्रकार से परिकलित प्रतिशत को अन्य फर्मों के तदनुरूप प्रतिशत के साथ आसानी से तुलना की जा सकती है जैसा कि ये संख्याएँ सामान्य आधार अर्थात् प्रतिशत से लाई जाती हैं।
- इस प्रकार के विवरण एक विश्लेषक को एक ही उद्योग की भिन्न आकार की दो कंपनियों की संचालन एवं वित्तीय विशिष्टताओं की तुलना करने की अनुमति देते हैं।
- सामान्य आकार के विवरण फर्म के विभिन्न वर्षों के बीच आंतरिक तुलना और साथ ही साथ उसी वर्ष या अनेक वर्षों के लिए अंतर फर्म की तुलना, दोनों ही, के लिए उपयोगी होते हैं।
  - इस विश्लेषण को **'अनुलंब विश्लेषणों'** के नाम से भी जाना जाता है।

प्रवृत्ति विश्लेषण

- यह कई वर्षों की एक श्रृंखला के प्रचालन परिणामों एवं वित्तीय स्थिति के अध्ययन की एक तकनीक है।
- एक व्यावसायिक उद्योग/ उद्यम के पिछले वर्षों के आँकड़ों का उपयोग करते हुए, प्रवृत्ति का विश्लेषण चयनित आँकड़ों में एक अवधि के दौरान आए बदलावों का अवलोकन करके किया जा सकता है।
- प्रवृत्ति प्रतिशत एक प्रतिशत संबंध है जिसमें भिन्न वर्षों की प्रत्येक मद को आधार वर्ष की उसी समान मद की तरह ही वहन करता है।
- प्रवृत्ति विश्लेषण इसलिए महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि इसमें दीर्घकालिक दृष्टिकोण होता है, अतः यह व्यवसाय की प्रकृति के आधारभूत बदलाव के बिंदु को इंगित करता है।
- एक विशिष्ट अनुपात में एक प्रवृत्ति को देखकर, कोई व्यक्ति यह जान सकता है कि अनुपात गिर रहा है या बढ़ रहा है या लगातार सापेक्षिक तौर पर स्थिर है।
  - इस अवलोकन से, समस्या का पता लगाया जा सकता है या अच्छे या बुरे प्रबंधन के संकेत देखे जा सकते हैं।

अनुपात विश्लेषण

- यह महत्त्वपूर्ण संबंधों का वर्णन करता है जो कि एक फर्म के तुलना–पत्र में, लाभ व हानि विवरण में विद्यमान होते हैं।
- वित्तीय विश्लेषण की तकनीक के रूप में लेखांकन अनुपात आय एवं तुलना – पत्र की व्यक्तिगत मदों के बीच तुलनात्मक महत्त्व को मापते हैं।
- यह भी संभव है कि अनुपात विश्लेषण की तकनीक से एक उद्यम की लाभप्रदता, ऋण शोधन क्षमता तथा सक्षमता को मूल्यांकित किया जा सकता है।

रोकड़ प्रवाह विश्लेषण

- यह किसी संस्थान के रोकड़ के वास्तविक अंतर्वाह एवं बहिर्वाह को दर्शाता है।
- ''एक व्यवसाय में आवक रोकड़ के बहाव को रोकड़ अंतर्वाह या धनात्मक रोकड़ प्रवाह तथा फर्म से बाहर जाने वाल रोकड़ के बहाव को रोकड़ बहिर्वाह अथवा ऋणात्मक रोकड़ प्रवाह कहते हैं।''
- रोकड़ के अंतर्वाह एवं बहिर्वाह के बीच का अंतर निवल रोकड़ प्रवाह है।
- रोकड़ प्रवाह विवरण यह दर्शाते हुए इस प्रकार से तैयार किया जाता है जिसमें प्राप्त रोकड़ एक लेखांकन वर्ष के दौरान उपयोग की जाती है।
- जो रोकड़ प्राप्ति के स्रोतों को दर्शाता जाता है और इसके साथ ही वह उद्देश्य भी जिसमें रोकड़ भुगतान किया गया है।
    - अतः यह एक उद्यम की रोकड़ स्थिति के बदलावों के लिए दो तुलना–पत्र की तिथियों के बीच (रोकड़ स्थिति) के कारणों को संक्षेपीकृत करता है।

कार्यशील पूँजी

- व्यवसाय के संचालन से सम्बन्धित दिन–प्रतिदिन की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए कुछ सम्पत्तियों की आवश्यकता होती है।
- इन सम्पत्तियों में रोकड़, प्राप्त विपत्र, विनियोग, कच्चा माल, निर्मित माल एवं अल्पकालीन ऋण आदि को सम्मिलित किया जाता है।
    - इन सम्पत्तियों में विनियोजित पूँजी को कार्यशील पूँजी कहते हैं।
- कार्यशील पूँजी व्यवसाय के दिन–प्रतिदिन के आवश्यकताओं की पूर्ति एवं प्रगति हेतु स्थिर सम्पत्तियों के लिए आवश्यक पूँजी के साथ–साथ चालू सम्पत्तियों के लिए भी पर्याप्त पूँजी की व्यवस्था करती है।
    - किसी भी कोष की प्राप्ति जो चालू सम्पत्तियों को बढ़ाता है।
    - उस कोष को कार्यशील पूँजी की संज्ञा दी जाती है।

कार्यशील पूँजी की अवधारणा एवं प्रबन्ध

- कार्यशील पूँजी का अर्थ बहुत विवादास्पद है।
- इसकी सर्वमान्य परिभाषा नहीं है।
- अलग अलग विद्वानों ने अलग अलग ढंग से इसका अर्थ प्रस्तुत किया है।
    - अतः कार्यशील पूँजी के वास्तविक अर्थ को समझने के लिए उसकी अवधारणाओं का अध्ययन एवं विश्लेषण आवश्यक है।
- कार्यशील पूँजी की अवधारणाएँ निम्न हैं –
    - **परिणात्मक अवधारणा**
        - इस अवधारणा के अनुसार कार्यशील पूँजी की मात्रा व्यवसाय की कुल चालू सम्पत्तियों की मात्रा के बराबर होती है।
        - सकल कार्यशील पूँजी (Gross Working Capital) – संस्था की समस्त चल सम्पत्तियों का योग (Total Current Assets)।
        - चालू सम्पत्तियों से आशय उन सम्पत्तियों से है जिन्हें लेखांकन वर्ष के दौरान रोकड़ में परिवर्तित किया जा सकता है।

- इसमें रोकड़ बैंक शेष, अल्पकालीन विनियोग, देनदार प्राप्य विपत्र और रहतियाँ को सम्मिलित किया जाता है।

- **गुणात्मक अवधारणा**
  - इस विचारधारा के अनुसार चालू सम्पत्तियाँ, चालू दायित्वों से अनिवार्य रूप से अधिक होने चाहिए।
  - यदि व्यवसाय में चालू सम्पत्तियाँ एवं चालू दायित्व बराबर होंगे तो संस्था में कार्यशील पूँजी शून्य होगी।
  - कार्यशील पूँजी का यह अर्थ एकाकी व्यापार एवं साझेदारी संगठनों में अधिक उपयुक्त माना जाता है जहाँ स्वामित्व एवं प्रबन्ध दोनों एक ही हाथ में केन्द्रित होते हैं।
  - यह परिभाषा गुणात्मक पहलू (Qualitativeaspects) पर अधिक बल देती हैं और लेखांकन में सरलता, वित्तीय सुदृढ़ता और सुरक्षा सीमा का सूचक होती है।
- **परिचालन चक्र अवधारणा**
  - इस अवधारणा के अनुसार व्यवसाय एक गतिशील क्रिया है और इसकी दिन–प्रतिदिन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए नकद वित्त की आवश्यकता होती है जिसकी प्राप्ति चक्रीय पूँजी के माध्यम से आसानी से की जा सकती है।
  - एक व्यावसायिक संस्था के लिए कितनी नकद राशि की आवश्यकता होती है।
  - यह उसके परिचालन चक्र पर निर्भर करता है अर्थात् सामग्री के क्रय एवं नकद में उसके परिवर्तन के मध्य का समय परिचालन चक्र अथवा कार्यशील पूँजी कहलाता है।

आधुनिक अवधारणा

- आजकल कार्यशील पूँजी की एक नवीन अवधारणा विकसित हुँइ है जो परिचालन चक्र अवधारणा के नाम से भी जानी जाती है।
- इस अवधारणा के अनुसार ''कार्यशील पूँजी उपक्रम पूँजी का वह तरल भाग है जिसकी सामान्य परिचालन चक्र की अवधि में आवश्यकता होती है।
- किसी उपक्रम की सम्पूर्ण परिचालन अवधि में जितनी नकद धन की आवश्यकता होती है, वह कार्यशील पूँजी कहलाती है।
- नकद धन की जरूरत परिचालन चक्र की अवधि के परिचालन व्ययों पर आधारित होती है।
- प्रारम्भ में कार्यशील पूँजी के लिए नकद धन की आवश्यकता होती है।
  - इसके बाद नकद धन से कच्चा माल क्रय किया जाता है।
- उत्पादन प्रक्रिया कच्चे माल को अर्द्धनिर्मित माल एवं निर्मित माल में परिवर्तित कर देती है।
- निर्मित माल को उधार विक्रय करने पर स्वस्थ देनदार अथवा प्राप्त विपत्र का हो जाता है।
  - जिनसे बाद में नकद धन वसूल किया जाता है।
- यह कार्यशील पूँजी का परिचालन चक्र बारम्बार चलता रहता है।

कार्यशील पूँजी प्रबन्ध

- व्यवसाय में पर्याप्त मात्रा में कार्यशील पूँजी का होना आवश्यक है।
- इस दृष्टि से व्यवसाय की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हए कार्यशील पूँजी की मात्रा आवश्यकता अनुसार होने चाहिए।

- कार्यशील पूँजी के प्रबन्ध का उद्देश्य संस्था की चालू सम्पत्तियों एवं चालू दायित्वों के मध्य इस प्रकार सामंजस्य स्थापित करना होता है कि, कार्यशील पूँजी की मात्रा का निर्धारण अनुकूलतम हो सके।
  - अतः कार्यशील पूँजी का प्रबन्ध वित्तीय प्रबन्ध का आंतरिक भाग है।
  - इसलिए कार्यशील पूँजी का प्रबन्ध एक संस्था के आर्थिक स्रोतों पर नियंत्रण करने एवं उसकी लाभदायिकता को बनाये रखने में सहायक सिद्ध होता है।
- कार्यशील पूँजी का प्रबन्ध उस संस्था की जोखिम, तरलता एवं लाभदायिकता के बीच सही सामंजस्य बनाए रखने में सहायता करता है।
- प्रत्येक व्यवसाय के संचालन के लिए स्थायी एवं कार्यशील दो प्रकार की पूँजी की आवश्यकता पड़ती है।
- स्थायी पूँजी को स्थिर सम्पत्तियों जैसे – भूमि, भवन, संयन्त्र मशीनरी, फर्नीचर, फिटिंग्स इत्यादि में प्रयोग किया जाता है।
- इनके उचित प्रबन्ध के लिए पूँजी बजटन, आदि प्रविधियाँ काम में लाई जाती हैं।
- इसके विपरीत, कार्यशील पूँजी व्यवसाय के दिन–प्रतिदिन के कार्यों को संचालित करने के लिए आवश्यक होती है, इन्हें चल सम्पत्तियों में विनियोग किया जाता है।
  - इन चल सम्पत्तियों में रोकड़ रहतियाँ, प्राप्य विपत्र, आदि सम्मिलित होते हैं।
- कार्यशील पूँजी प्रबन्ध का सम्बन्ध चालू सम्पत्तियों व चालू दायित्वों के अन्तर–सम्बन्धों को व्यवस्थित करने से होता है।
- ''कार्यशील पूँजी प्रबन्ध उन समस्याओं से सम्बन्धित है जो चालू सम्पत्तियों, चालू दायित्वों एवं पारस्परिक अन्तरसम्बन्धों को प्रबन्धित करने से उत्पन्न होती है।
- ''कार्यशील पूँजी प्रबन्ध विविध चालू सम्पत्तियों जैसे – रोकड़ एवं विपणन योग्य प्रतिभूतियां प्राप्य विपत्र एवं रहतियाँ के प्रशासन से सम्बन्धित होता है।

कार्यशील पूँजी की आवश्यकता एवं महत्व

- व्यवसाय का संचालन उचित मात्रा में स्थायी सम्पत्तियों का प्रबन्ध कर लेने मात्र से ही नहीं किया जा सकता बल्कि इन सम्पत्तियों का पूर्ण उपयोग करके ही व्यवसाय में लाभ अर्जित किया जा सकता है।
- स्थायी सम्पत्तियों का पूर्ण उपयोग कार्यशील पूँजी के उचित उपयोग पर निर्भर करता है।
  - अतः व्यवसाय की दिन–प्रतिदिन की क्रियाओं में कार्यशील पूँजी के प्रबन्ध की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है।
- इसकी आवश्यकता व्यवसाय की सम्पत्तियों की क्रय शक्ति को सुरक्षा प्रदान करना एवं विनियोगों पर प्रत्याय बढ़ाना है।
- इस हेतु कार्यशील पूँजी का निर्धारण व्यवसाय की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए किया जाता है।
- सामान्यतः किसी भी व्यवसाय में कार्यशील पूँजी की मात्रा न तो आवश्यकता से अधिक होनी चाहिए और न ही कम।
  - दोनों ही स्थितियाँ व्यवसाय के लिए हानिकारक सिद्ध होती है।
- एक व्यवसाय में कार्यशील पूँजी का वही स्थान होता है जो मानव शरीर में हृदय का होता है।
- हृदय को जैसे ही रक्त मिलता है वह कार्य करना प्रारम्भ कर देता है।
  - वैसे ही व्यवसाय में कार्यशील पूँजी स्रोत के एकत्रित होते ही व्यवसाय अपनी गतिविधियाँ आरम्भ करने लगता है और जैसे ही वह प्रवाह रूक जाता है व्यवसाय समापन की ओर अग्रसर होने लगता है।

- इसलिए कहा जाता है कि व्यवसाय की तरलता की आवष्यकताएँ क्या हैं और दायित्वों का भुगतान कब और कितने समय बाद करना है।

- संस्था के पास जितनी चल सम्पत्तियाँ हैं उन्हें किस दर या सीमा से परिवर्तित किया जा सकता है।
- इसके अतिरिक्त संस्था की स्कन्ध नियंत्रण प्रणाली एवं स्थायी सम्पत्तियों के प्रशासन का भी अध्ययन करना आवश्यक है।

पर्याप्त कार्यशील पूँजी के लाभ

- जिस प्रकार मनुष्य के जिन्दा रहने के लिए भोजन आवश्यक है। उसी प्रकार कार्यशील पूँजी की उचित मात्रा व्यवसाय के लिए महत्वपर्ण होती है।
  - परन्त कार्यशील पूँजी का आवश्यकता से अधिक या कम होना दोनों ही हानिकारक हैं।
- अधिक व बिना प्रयोजन कार्यशील पूँजी होने से धन के दुरूपयोग, प्रबन्धकीय अकुशलता, अंशधारियों में असन्तोष, लाभदायकता में कमी, खर्चों में वृद्धि, वित्तीय संस्थाओं का अविश्वास, सट्टेबाजी को जन्म व अंश मूल्यों में कमी की दिक्कतें आती हैं।
- इसके विपरीत, कार्यशील पूँजी की कमी होने पर व्यवसाय के संचालन, सरलता, लाभदायकता, व आकस्मिकताओं का सामना करने में कठिनाई आती है।
- पर्याप्त मात्रा में कार्यशील पूँजी से उपक्रम को निम्नलिखित लाभ प्राप्त होते हैं –
  - **व्यवसाय की शोधनक्षमता**
    - पर्याप्त कार्यशील पूँजी उत्पादन के निर्बाध प्रवाह की व्यवस्था द्वारा कम्पनी की शोधन क्षमता बनाये रखने में सहायक होती है।
    - उच्च शोधन क्षमता तृतीय पक्षों की दृष्टि में कम्पनी की वित्तीय स्थिति की सुदृढ़ता का प्रतीक होती है और आवश्यकता पड़ने पर तत्काल उधार लेने में कोई दिक्कत नहीं होती है।
  - **नकद छूट का लाभ**
    - कम्पनी अपने आपूर्तिकर्ताओं को उधार खरीदे गये माल का तुरन्त नकद भुगतान करके आकर्षक छूट प्राप्त कर सकती है।
    - इससे लागत पर नियंत्रण और मूल्यों में कमी सम्भव होती है।
  - **आकर्षक लाभांश एवं अंश मूल्यों में स्थिरता**
    - पर्याप्त कार्यशील पूँजी होने पर कम्पनी के संचालक एवं प्रबन्धक अंशधारीयों को आकर्षक लाभांश वितरित कर सकते हैं।
    - ऐसी दशा में अंशधारी तो संतुष्ट रहते ही हैं साथ ही साथ कम्पनी की प्रतिभूतियों का बाजार मूल्य भी स्थिर रहता है।
  - **अनुकूल बाजार अवसरों का लाभ**
    - केवल वे प्रतिष्ठान ही जिनके पास यथेष्ठ कार्यशील पूँजी है।
    - अनुकुल बाजार अवसरों का लाभ उठा सकते हैं ।
    - अचानक निर्मित माल आपूर्ति का बड़ा आदेश मिलने पर अथवा कच्चे माल के मूल्यों में कमी होने पर कम्पनी कार्यशील पूँजी की पर्याप्तता के आधार पर लाभ उठा सकती है।

- **संकटों का सामना**
  - पर्याप्त कार्यशील पूँजी होने पर कोइ भी संस्था छोटे–छोटे संकटों, आकस्मिक घटनाओं व व्यापारिक संकटों का सरलतापूर्वक सामना कर सकती हैं।
- **उच्च मनोबल**
  - कार्यशील पूँजी के यथेष्ठ होने से व्यवसाय में सुरक्षा का वातावरण, आत्मविश्वास, उच्च मनोबल, समग्र कार्यदक्षता उत्पन्न होती है जिससे प्रबन्धक व कर्मचारियों पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ता है।
  - अन्ततोगत्वा संस्था का कुशलता एव लाभार्जन क्षमता पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
- **अन्य लाभ**
  - वेतन मजदूरी व अन्य दैनिक कार्यों का नियमित भुगतान,
  - स्थायी सम्पत्तियों की उत्पादकता में वृद्धि,
  - विनियोगों पर उचित प्रत्याय,
  - आकस्मिक भुगतान की सुविधा।

कार्यशील पूँजी के प्रकार अथवा वर्गीकरण

- **सकल कार्यशील पूँजी**
  - इसका अभिप्राय चालू सम्पत्तियों के कुल योग से होता है।
  - रोकड़ बैंक, शेष, देनदार, प्राप्य विपत्र, पूर्ववत भुगतान, आदि जैसी चालू सम्पत्तियों का योग सकल कार्यशील पूँजी कहा जाता है।
- **शुद्ध कार्यशील पूँजी**
  - यह चालू सम्पत्तियों एवं चालू दायित्वों का अन्तर होता है।
  - शुद्ध कार्यशील पूँजी की मात्रा सकल कार्यशील पूँजी का वह भाग होती है जिसका वित्तीयन दीर्घकालीन कोषों से किया जाता है।
  - इसकी गणना दीर्घकालीन पूँजी में से स्थायी सम्पत्तियों को घटाकर की जा सकती है।
- **स्थायी कार्यशील पूँजी**
  - कार्यशील पूँजी की वह मात्रा जो व्यवसाय के सामान्य संचालन के लिए नियमित रूप से सदैव रखी जानी चाहिए।
  - इसकी प्रकृति स्थायी एवं दीर्घकालीन होती है जिसका वित्तीयन भी दीर्घकालीन वित्तीय स्रोतों से किया जाता है।
- **परिवर्तनशील कार्यशील पूँजी**
  - स्थायी कार्यशील पूँजी के अतिरिक्त वर्ष के कुछ महीनों में व्यापार की अधिकता के कारण परिवर्तनशील कार्यशील पूँजी की आवश्यकता भी पड़ सकती है।
  - चीनी उद्योग, ऊनी वस्त्र उद्योग, फ्रीज, कूलर, आदि मौसमी वस्तुओं को उत्पादित करने वाली संस्थाओं को मौसम के खास महीनों में इस प्रकार की अतिरिक्त पूँजी की आवश्यकता होती है।
  - मौसमी प्रकृति के कारण इसकी मात्रा घटती बढ़ती रहती है जिसकी व्यवस्था अल्पकालीन स्रोतों से की जाती हैं।

कार्यशील पूँजी को निर्धारित करने वाले तत्व

- **व्यवसाय का स्वरूप**
  - कार्यशील पूँजी की मात्रा को प्रभावित करने वाला सर्वाधिक प्रमुख कारक व्यवसाय का स्वरूप है।
  - रेलवे, सडक, गैस, आदि जनोपयोगी व सेवा संस्थाओं में निरन्तर माँग और नकद विक्रय होने से कम कार्यशील पूँजी की आवश्यकता होती है।
  - इनकी माँग सदैव रहने से रोकड़ प्रवाह अनवरत होता रहता है।
    - इसके विपरीत, विलासिता व सौन्दर्य प्रसाधन उत्पन्न करने वाली संस्थाओं एवं व्यापारिक संस्थाओं में अधिक कार्यशील पूँजी की आवश्यकता होती है।
  - इनकी परिवर्तनशील माँग होने के कारण रहतियाँ में बहुत विनियोजन करना पड़ता है।
- **व्यवसाय का आकार**
  - एक संस्था की कार्यशील पूँजी की मात्रा उसके व्यवसाय के आकार से प्रत्यक्षतः जुड़ी होती है।
  - एक छोटे आकार के व्यवसाय के लिए नकद रोकड़, प्राप्य बिल तथा रहतियाँ के लिये अपेक्षाकृत कम पूँजी की आवश्यकता होती है।
  - बड़े आकार के व्यवसाय के लिए अधिक कार्यशील पूँजी की आवश्यकता होती हैं।
- **उत्पादन प्रक्रिया की अवधि**
  - यदि उत्पादन प्रक्रिया अधिक समय लेने वाली होती है तो स्वाभाविक तौर पर कच्चे माल को नये माल का रूप देने में अधिक समय, लागत और श्रम लगता है।
    - इसके परिणामस्वरूप अधिक कार्यशील पूँजी चाहिए।
  - किन्तु यदि उत्पादन प्रक्रिया की अवधि अपेक्षाकृत छोटी होती है तो कम मात्रा में कार्यशील पूँजी चाहिए।
- **कार्यशील पूँजी चक्र**
  - कार्यशील पूँजी चक्र कच्ची सामग्री के क्रय से प्रारम्भ होता है तथा निर्मित माल के रूपान्तरण व निर्मित माल के विक्रय से रोकड़ की वसूली के साथ समान होता है।
  - कार्यशील पूँजी चक्र की अवधि जितनी लम्बी होगी, उसकी आवश्यकता भी उतनी ही अधिक होगी।
- **क्रय की शर्ते एव रीतियाँ**
  - कच्चा माल व अन्य सामान किन महीनों व शर्तों पर क्रय किया जाता है का सीधा प्रभाव कार्यशील पूँजी की मात्रा पर पड़ता है।
  - यदि कच्चे माल की समस्त वार्षिक जरूरत को फसल के ही समय एक साथ खरीद कर रख लिया जाता है तो कार्यशील पूँजी की अधिक आवश्यकता होगी, परन्तु वर्ष पर्यन्त स्थानीय बाजार से कच्चा माल क्रय किया जाता है तो कम कार्यशील पूँजी की आवश्यकता होगी।
  - इसी प्रकार यदि कच्चा माल विक्रेता से लम्बी अवधि के उधार पर आपूर्ति किया जाता है तो उसे निर्मित करने के बाद बेचकर कच्चे माल का भुगतान किया जा सकता है।
    - परन्तु यदि कच्चा माल नकद खरीदना पड़ता है तो फिर अधिक कार्यशील पूँजी की व्यवस्था करनी पड़ती होगी।
- **विक्रय की शर्तें**
  - माल का विक्रय नकद एवं उधार किया जा सकता है।
  - यदि निर्मित माल नकद बेचा जाता हो तो कम कार्यशील पूँजी की आवश्यकता होगी।

- यदि माल उधार बेचा जाता है तो उसके भुगतान में अधिक समय लगता है तो निश्चित तौर पर अधिक कार्यशील पूँजी की आवश्यकता होगी।

- **व्यवसाय चक्र**
  - व्यवसाय चक्र भी कार्यशील पूँजी की मात्रा को प्रभावित करते हैं।
  - तेजी काल में विक्रय में वृद्धि, कीमतों में बढ़ोत्तरी व व्यवसाय के आशावादी विस्तार, आदि के कारण अधिक कार्यशील पूँजी की आवश्यकता पड़ती है।
  - मन्दी के समय माँग कम होने के कारण विक्रय में गिरावट आती है, व्यापार में संकुचन होता है व देनदारों से धन वसूली में दिक्कत आती है।
    - ऐसी स्थिति में कार्यशील पूँजी का एक बड़ा भाग निष्क्रिय पड़ा रह सकता है।
- **बैंकिंग सम्बन्ध**
  - ऐसी संस्थाएँ जो बैंकों से अच्छे व मधुर सम्बन्ध विकसित करने में सक्षम होती है तथा बैंक की दृष्टि से जिनकी साख उत्तम होती है वे कम कार्यशील पूँजी से भी व्यवसाय संचालित कर सकती हैं। आवश्यकता होने पर बैंक उन्हें शीघ्रता से वित्त प्रदान कर सकता है।
- **लाभांश नीति**
  - अगर कम्पनी उदार लाभांश नीति अपनाती है तो लाभांश वितरित करने के लिए अधिक कार्यशील पूँजी की आवश्यकता होगी।
  - दूसरी ओर, यदि कम्पनी नकद लाभांश न वितरित करके बोनस अंशों का निर्गमन करती है तो यह कार्यशील पूँजी की मात्रा में कमी लाएगा।
- **व्यवसाय के विकास की दर**
  - एक संस्था की कार्यशील पूँजी की आवष्यकताएँ इसकी व्यावसायिक क्रियाओं के विस्तार और विकास के साथ–साथ बढ़ती है ।
  - यदि व्यापार विस्तार व विकास की दर धीमी है तो कम कार्यशील पूँजी की आवश्यकता होगी जिसकी व्यवस्था लाभों के पुनर्विनियोग से की जा सकती है।
    - किन्तु यदि व्यापार का विस्तार बड़े पैमाने पर किया जाता है तो तीव्र विकास हेतु अधिक कार्यशील पूँजी की आवश्यकता पड़ती है।
- **अन्य कारक**
  - कुछ अन्य तत्व जैसे – मूल्य स्तर परिवर्तन, प्रबन्धकीय योग्यता, राजनीतिक स्थायित्व, युद्ध आशंका, आयात नीति, परिवहन व संचार की सुविधा, आदि भी कार्यशील पूँजी की आवश्यकता प्रभावित करती हैं।

कार्यशील पूँजी के स्रोत अथवा साधन

- **दीर्घकालीन साधन**
  - स्थायी कार्यशील पूँजी का वित्त पोषण करने के लिए उपक्रम को दीर्घकालीन साधनों को ही अपनाना चाहिए।
  - दीर्घकालीन साधनों से ही लम्बे समय तक के लिए, वित्त प्राप्त हो सकता है।

- कार्यशील पूँजी के दीर्घकालीन साधन निम्नलिखित हो सकते हैं –

1. अंश

- नये अंशों का निर्गमन कार्यशील पूँजी का मुख्य साधन है।
- एक कम्पनी समता और पूर्णाधिकार अंशों का निर्गमन कर सकती है।
- पहले स्थगित अंशों के निर्गमन का अधिकार कम्पनियों को प्राप्त था, जिसे भारतीय कम्पनी अधिनियम, 1956 के द्वारा रोक दिया गया है।
- पूर्वाधिकार अंशों को एक निश्चित दर से लाभांश प्राप्ति के सम्बन्ध में और कम्पनी समापन के समय पूँजी के पुनर्भुगतान के लिए प्राथमिकता प्राप्त होती है।
- समता अंशों को लाभ की उपलब्धता के आधार पर लाभांश प्रदान किया जाता है।
- कम्पनी को अंशों के निर्गमन से स्थायी कार्यशील पूँजी की अधिकतम राशि की व्यवस्था करनी चाहिए।

2. ऋण पत्र

- ऋण पत्र निर्गमन भी अंशों की ही भांति कार्यशील पूँजी का महत्वपूर्ण साधन है।
- ऋण पत्र किसी भी धारक को ऋण की स्वीकृति का कम्पनी द्वारा निर्गमित प्रपत्र होता है।
- ऋण पत्र धारक कम्पनी के लेनदार होते हैं और निश्चित दर से ब्याज प्राप्त करने के हकदार होते हैं।

3. प्रतिपादित लाभ

- यह वित्त का एक आन्तरिक साधन है जो सर्वाधिक सस्ता और वस्तुतः लागतविहीन स्रोत होता है।
- यह साधन पूर्व स्थापित संस्थाओं द्वारा अपने विस्तार, आधुनिकीकरण और प्रतिस्थापन आदि के लिये प्रयोग किया जाता है।

4. प्राचीन सम्पत्तियों का विक्रय

- बेकार के अप्रयुक्त स्थायी सम्पत्तियों को बेचकर भी कार्यशील पूँजी की व्यवस्था की जा सकती है।
- प्रबन्धन इस साधन पर कम ही निर्भर रह सकता है क्योंकि यह सामयिक, अनियमित और अविश्वसनीय होता है।

5. दीर्घकालीन ऋण

- बैंकों, विनियोग कम्पनियों व विशिष्ट वित्तीय संस्थाओं से दीर्घकालीन ऋण प्राप्त करके भी कार्यशील पूँजी का वित्तीयन किया जा सकता है।
- भारतीय औद्योगिक वित्त निगम (IFCI), राज्य वित्त निगमों (SFCs) भारतीय औद्योगिक विकास बैंक (IDBI), नाबार्ड (NABARD) आदि इसके उदाहरण है।

- **अल्पकालीन साधन**
  - अल्पकालीन साधनों से अस्थायी कार्यशील पूँजी की व्यवस्था की जाती है जिसकी लागत भी अपेक्षाकृत कम होती है।
  - प्रमुख अल्पकालीन साधन निम्नलिखित हैं –

1. वाणिज्यिक बैंक

- अल्पकालीन कार्यशील पूँजी के सबसे महत्वपूर्ण स्रोत वाणिज्यिक बैक होते हैं।
- बैंक सामान्यतया अग्र चार रूपों में ऋण प्रदान करते हैं –

(i) कद साख

- ✓ इस व्यवस्था के अन्तर्गत बैंक तथा ग्राहक के मध्य एक औपचारिक समझौता होता है जिसमें साख की अधिकतम सीमा निर्धारित कर दी जाती है।
- ✓ ग्राहक निर्दिष्ट सीमा के भीतर आवश्यकतानुसार राशि का आहरण कर सकता है।
- ✓ ब्याज आहरित किए गये ऋण पर ही लगता है न कि सम्पूर्ण अधिकतम सीमा पर।

(ii) बैंक अधिविकर्ष

- ✓ अधिविकर्ष बैंक के साथ की गई ऐसी व्यवस्था है जिसमें चालू खाता के ग्राहक अपने खाते में जमा शेष के अतिरिक्त एक निर्धारित सीमा तक धन के आहरण की स्वीकृति बैंक से लेता है।
- ✓ इससे ग्राहक चेक अनादृत होने पर उत्पन्न विषम स्थिति से बच जाता है और कुछ समय के लिए ऋण सुविधा भी मिल जाती है।
- ✓ व्यवहार में नकद साख और बैंक अधिविकर्ष में कोई खास अन्तर नहीं होता है लेकिन इतना अवश्य है कि अधिविकर्ष अति अल्पकाल के लिए स्वीकृत किया जाता है और यह एक अस्थायी व्यवस्था होती है जबकि नकद साख अपेक्षाकृत अधिक अवधि के लिए स्वीकृत होता है।

(iii) सुरक्षित ऋण

- ✓ बैंक जब सम्पत्तियों की जमानत के आधार पर एकमुश्त अग्रिम देता है तो उसे सुरक्षित ऋण कहते हैं।
- ✓ प्रायः बैंक बॉण्डस, रहतियाँ व व्यक्तिगत जमानत के आधार पर इस प्रकार का अल्पकालीन ऋण देती है।
- ✓ ऋण की वापसी एकमुश्त या किस्तों में की जा सकती है।

(iv) बिलों की कटौती

- ✓ इसमें ग्राहक बैंक को अपने प्राप्य बिलों की अपेक्षाकृत कम मूल्य पर बेच देते हैं अथवा वर्तमान ब्याज की दर पर कटौती करा लेता है।
- ✓ परिपक्वता की तिथि पर बैंक सम्बद्ध पक्ष से बिल का पूर्ण अंकित मूल्य प्राप्य कर लेता है।
  - o इस प्रकार ग्राहक कटौती की धनराशि की हानि उठाकर आवश्यकतानुसार वित्त प्राप्त कर लेता है।

2. व्यापार साख

- प्रायः सभी व्यावसायिक इकाइयों को माल विक्रेता से अल्पकाल के लिए अपनी ख्याति के अनुसार उधार मिल जाता है जिसका भुगतान बाद में एकमुश्त या किश्तों में किया जाता है।
- कभी–कभी इस उधार माल के लिए विपत्र, प्रतिज्ञा–पत्र, हुण्डी, आदि लिख दिए जाते हैं।
- इस विधि में उधार पर ब्याज नहीं दिया जाता है परन्तु बहुधा विक्रेता माल की कीमत बढ़ा करके ही बेचता है।
- इस प्रकार अधिक कीमत लेकर ब्याज की पूर्ति कर ली जाती है।
- व्यापार साख की अवधि प्रायः 15 दिन से 3 माह तक की होती है।

3. देशी साहूकार

- छोटे तथा मध्यम आकार के उपक्रम अपनी कार्यशील पूँजी का महत्वपूर्ण हिस्सा देशी साहूकारों से प्राप्त करते हैं।
- ये लोग ब्याज की दर अधिक वसूल करते हैं।
  - ✓ अतः इनकी शरण में व्यावसायिक गृह अन्त में ही जाते हैं।
- आजकल वाणिज्यिक बैकों का प्रचलन बढ़ने से देशी साहूकारों की महत्ता दिन प्रतिदिन घट रही है।

4. जन निक्षेप

- मुम्बई एवं अहमदाबाद की सूती वस्त्र मिलों में जन निक्षेप कार्यशील पूँजी का प्रचलित स्रोत रहे हैं।
- वर्तमान में निजी व सार्वजनिक क्षेत्र की कम्पनियाँ इस साधन का प्रयोग निरन्तर कर रही हैं।
- इसमें जनता अपना धन तब तक कम्पनियों के पास जमा रखती है जब कि उन्हें ब्याज मिलता है।
- यह साधन कम्पनियों के लिए सुखद समय का साथी (Fair Weather Friend) सिद्ध होता है और संकट की स्थिति में जमाकर्ता वापसी की माँग कर सकते हैं।

5. ग्राहकों से अग्रिम

- कुछ व्यावसायिक गृह अपने ग्राहकों से माल के आदेश के साथ सम्पूर्ण या आंशिक भुगतान अग्रिम में प्राप्त कर लेते हैं जो कार्यशील पूँजी का अल्पकालीन साधन होता है ।
- यह पूँजी प्राप्त करने का लागत विहीन साधन है क्योंकि इस पर कोई ब्याज नहीं देना पड़ता है।
  - ✓ परन्तु प्रायः एकाधिकारी संस्थाएँ ही इस साधन को प्रयोग करने की स्थिति में होती है जहाँ पर ग्राहक कोई भी शर्त स्वीकार करने का बाध्य होता है।
  - ✓ प्रतिस्पर्धी वातावरण में और जिस संस्था की साख निर्बल हो, इस साधन का सहारा नहीं ले सकती है।

6. आन्तरिक साधन

- कार्यशील पूँजी के लिए ह्रास कोष, करों के लिए प्रावधान व उपार्जित व्यय जैसे आन्तरिक साधनों का भी उपयोग किया जा सकता है।
- लाभ में से कुछ भाग निकालकर बनाए गये हास कोष उस समय तक कार्यशील पूँजी प्रदान करते हैं जब तक कि कोइ स्थायी सम्पत्ति न क्रय की जाए अथवा लाभांश के रूप में वितरित न किया जाये।
- इसी तरह करों के लिए जो प्रावधान किया जाता है वह एक निश्चित अन्तराल पर भुगतान किया जाता है।
- इस बीच की अवधि में यह अल्पकालीन कार्यशील पूँजी के रूप में प्रयुक्त होता है।
- उपार्जित व्ययों की राशि भी भुगतान होने तक अल्पकालीन साधन होते हैं।

7. अन्य साधन

- सरकारी सहायता
- प्रबंधकों व संचालकों के ऋण
- कर्मचारियों की प्रतिभूतियाँ।